आर. एन. आई – राजहिन/2003/9899 डाक पंजीयन संख्या – श्रीगंगानगर/105/2015–2017

मासिक पत्रिका

अजायब ✲ बानी

वर्ष : पंद्रहवां | अंक : तीसरा | जुलाई – 2017

5 **मैंनू पुच्छण आण सहेलियां**

एक शब्द

सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

7 **दु:ख**

(गुरु अर्जुनदेव जी की बानी)

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

21 **सवाल-जवाब**

परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले

27 **अमृतवेला**

संपादक-प्रेम प्रकाश छाबड़ा
99 50 55 66 71 (राजस्थान)
98 71 50 19 99 (दिल्ली)

विशेष सलाहकार-गुरमेल सिंह नौरिया
96 67 23 33 04
99 28 92 53 04

उप संपादक-नन्दनी

सहयोग-परमजीत सिंह

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने नेशनल प्रिन्टर्स,नारायणा, नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।

e-mail : dhanajaibs@gmail.com | Website : www.ajaibbani.org

प्रकाशन दिनांक 1 जुलाई 2017 –184– मूल्य – पाँच रुपये

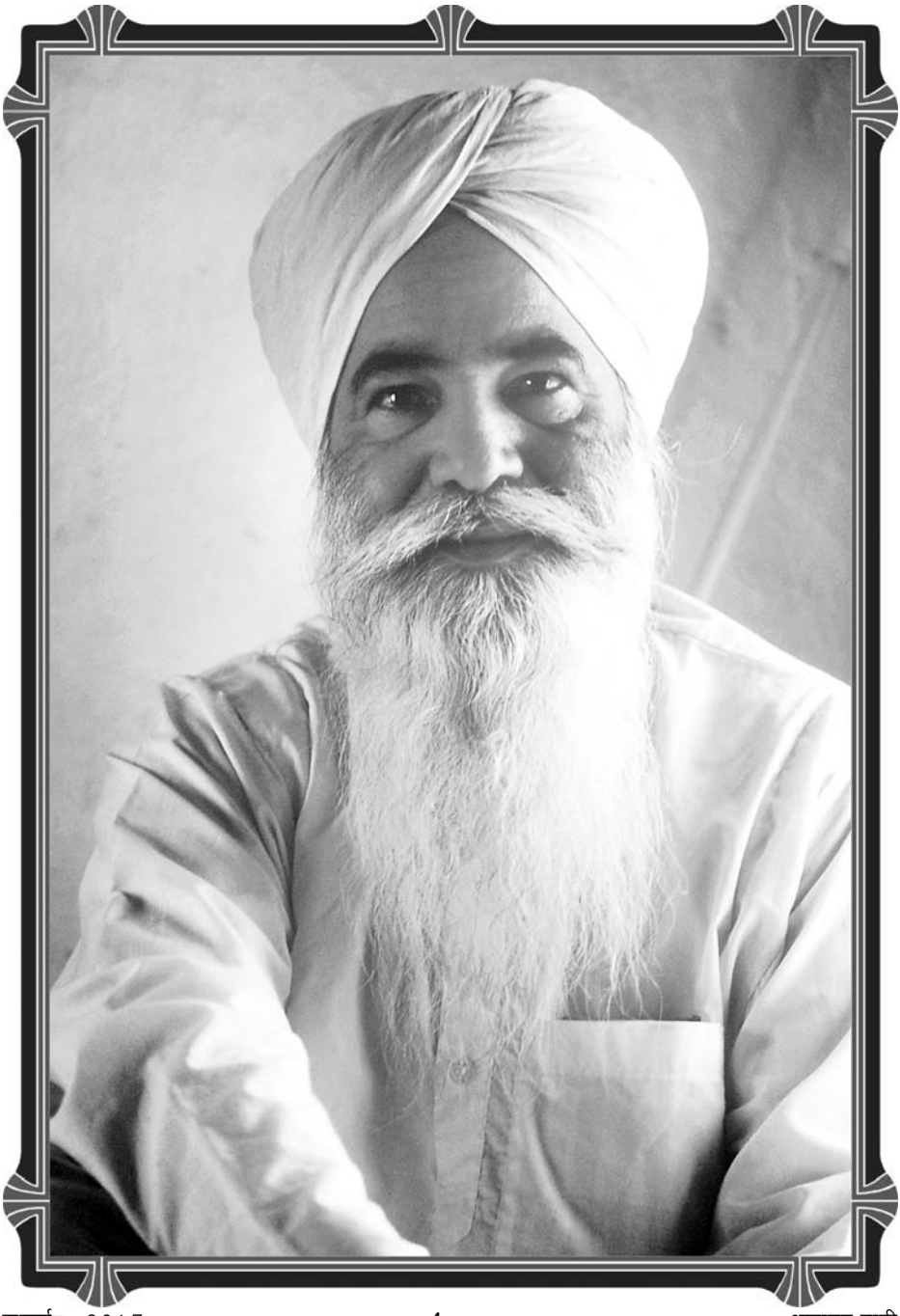

मैनूं पुच्छण आण सहेलियां

1. मैनूं पुच्छण आण सहेलियां, नीं तूं कीवें होई बीमार,
तूं रोवे धाहां मार के , तैनूं चढ़या रहे बुखार,

2. तूं अकदी–थकदी नां कदी, ते करदी नहीं आराम,
तैनूं सुत्तयां कदी नां वेखया , तेरी होई नींद हराम,

3. तेरे मुख ते खुशी नां दिस्स दी, तूं ते रहंदी सदा लाचार,
तैनूं हसदेयां कदी नां वेखया , तेरा कीदे नाल प्यार,

4. असीं हत्थ बन करिऐ बेनती, साथों रखीं ना भेद छुपा,
जरा दु:खड़े दस्सीं खोल के , सारा देवीं हाल सुना,

5. मेरे जागे भाग सुलखणें, मैनूं मिलया पति जमाल,
मैनूं रूलदी–फिरदी वेख के , दित्ता उच्चा तख्त संभाल,

6. मैं ओहदी होई सहेलियो, मेरा हरदम रखे ख्याल,
ओह मेरे घर विच आ गया, ओहदा नाम सन्त कृपाल,

7. अजे सद्धरा ना मेरियां लत्थियां, मेरा लुटया गया सुहाग,
ओह मैनूं चिट्टी चादर दे गया, किते लग्ग ना जाऐ दाग,

8. हुक्म उसदा मनण वास्ते, मैं अंदर वड़ गई आप,
ओहदी दस्सी जुगत ना भुल्ल दी, मैं हरदम कर दी जाप,

9. मैनूं वचन ओहदे पऐ मनणे, मेरे उत्ते जो लाया ला,
मैं सत्–सत् करके मन्न लऐ, दित्ता चरणी शीश झुका,

10. मैनूं चरनां विच बिठा के, कीते सतपुरुष ने वाक,
तूं जग दिया आसां छड के, रखीं इक सतगुरु दी आस,

11. तेरे विचों ओण सुगधियां, टप्प जाण समुन्द्रां तों पार,
तैं विच असमानां दे उडणां , तैनूं करन परियां नमस्कार,

12. दिन आजज हो के कटणें, नीवें हो रहणा संसार,
तेरी सतगुरु रखया करेगा, जीवां दा करीं उद्धार,

13. करे अर्ज 'अजायब' हत्थ जोड़ के, जागे भाग होऐ सतगुरु दयाल,
करां लख शुक्राने ओस दे, मैनूं मिल गए गुरु कृपाल,

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

दु:ख

गुरु अर्जुनदेव जी की बानी DVD-502 लेक्सिंग्टन, वर्जीनिया

मात गरभ दुख सागरो पिआरे तह अपणा नामु जपाइआ।।

यह बानी श्री गुरु अर्जुनदेव जी महाराज की है। सन्त–महात्मा मालिक के प्यारे हमेशा इस संसार में आए और आते ही रहेंगे, उनका रास्ता न कभी बंद हुआ है और न हो ही सकता है। आज बच्चे को माता–पिता की जितनी जरूरत है उतनी पहले भी थी और आगे भी रहेगी। माता–पिता के बिना कोई बच्चे की परवरिश नहीं कर सकता और न ही बच्चे को ज्ञान दे सकता है।

इसी तरह सन्त–सतगुरु के बिना कोई हमें मालिक की तरफ लेकर नहीं जा सकता, उसका पता नहीं बता सकता। हमें सन्तों के बिना कोई यह नहीं बता सकता कि कौन सा काम हमारे भले का है और कौन सा काम बुरे का है? हम परमात्मा से क्यों बिछुड़े हैं और हम परमात्मा से कैसे मिल सकते हैं? सन्त–महात्मा मालिक के प्यारे हमें बताते हैं चाहे हम किसी भी योनि में जन्म लें गर्भ के अंदर किस तरह के **दु:ख** और कष्ट हैं।

इंसान अपने रहने के लिए बड़े–बड़े मकान बनाता है उसमें हर किस्म के सुख और आराम के लिए फर्नीचर वगैरहा रखता है। क्या हमने कभी उस वक्त के बारे में सोचा है जब हमने इन सारी सहूलियतों को छोड़कर चले जाना है? बेशक हम जाने के लिए तैयार नहीं होते फिर भी एक ऐसी शक्ति है जो हमें सदा इन मकानों में तो क्या इस शरीर में भी नहीं रहने देगी।

कब्र में चले जाना है, कब्र में माँस को कीड़े खा जाते हैं और वक्त पाकर हड्डियां भी खत्म हो जाती हैं। वहाँ कौन सा हम जीवित बैठे हैं जो कीड़ो को माँस खाने से रोक सकें?

इसी तरह कब्र से भी ज्यादा दुखदायी जगह माँ का पेट है। वहाँ हमारे अंदर आत्मा होती है हम दु:ख–सुख महसूस कर रहे होते हैं। कई बार माँ के पेट के अंदर बच्चा बीमार हो जाता है वहाँ हम उसे कौन सी दवाई दे सकते हैं? कई बार बच्चा माँ के पेट में मर भी जाता है वहाँ कितने कष्ट और **दु:ख** हैं। आज कल के जमाने में ऐसा भी होता है कि बच्चे को गिरा दिया जाता है।

सोचकर देखें! अगर हम ऐसी जगह पर हों और हम बाहर संसार की हवा लेने की इंतजार में हों लेकिन कोई हमें ऐसी दवाई दे दे कि हम वहीं पर खत्म हो जाएं तो क्या यह **दु:ख** नहीं?

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''माता के पेट में समुंद्र जैसे **दु:ख** होते हैं। जब हम बाहर आते हैं तब भी हमें दु:ख और मुसीबतों का सामना करना पड़ता है, जिंदगी संघर्ष भरी होती है। माता के पेट के अंदर हम उस शब्द के साथ जुड़े होते हैं और वहाँ शब्द के आसरे ही अपना वक्त काटते हैं।

वहाँ हम साँस–साँस के साथ परमात्मा के आगे विनती करते हैं कि हे परमात्मा! तू मुझे एक बार इस अंधेर कोठरी से बाहर निकाल दे मैं तेरा दसवंद दूँगा, तेरा नाम जपूंगा लेकिन जब बाहर मातलोक की हवा लगती है तब यह इंसान कहता है कि कोई मौत–पैदाईश नहीं। मेरे लिए मौत नहीं, मौत शायद! और लोगों के लिए है।''

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज परमात्मा के आगे फरियाद करते हैं, ''हे परमात्मा! हम माता के गर्भ के अंदर जो **दु:ख** भोगते हैं वे समुंद्र से भी ज्यादा हैं लेकिन वहाँ तूने हमें नाम के आसरे रखा। जब हम बाहर आए तो हमारे ऊपर माया का इस तरह असर हुआ कि हम तुझे भूल गए, तुझे याद नहीं करते बस! यही चाहते हैं कि सारी दुनिया का धन–दौलत हमारे घर मे आ जाए। लेकिन तजुर्बा बताता है कि हम जितनी ज्यादा माया इकट्ठी करते हैं उतनी ही अपनी शान्ति भंग कर लेते हैं।''

बाहरि काढि बिखु पसरीआ पिआरे माइआ मोहु वधाइआ।।
जिसनो कीतो करमु आपि पिआरे तिसु पूरा गुरु मिलाइआ।।

अब गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''जिनके ऊपर परमात्मा दयाल होता है, मेहरबान होता है और जिन्हें बख्शना चाहता है उन्हें सबसे पहले सन्तों की शरण में ले आता है। जब आसमान में बादल हो जाते हैं उस समय हमें आस होती है कि बारिश जरूर होगी। इसी तरह जब हम सन्त–महात्माओं की शरण में आते हैं तो हमें भरोसा हो जाता है कि हम परमात्मा के नजदीक हो रहे हैं।''

सो आराधे सासि सासि पिआरे राम नाम लिव लाइआ।।

सन्त–महात्मा कोई नई कौम बनाने के लिए नहीं आते और न ही पहले बनी किसी की कौम को तोड़ने के लिए आते हैं। महात्मा हमें शब्द–नाम के साथ जोड़ते हैं। सिमरन के जरिए मन और आत्मा एकाग्र होते हैं, ध्यान करने से ये टिक जाते हैं, आत्मा शब्द के ऊपर सवार होकर अपने घर पहुँच जाती है।

सन्त–महात्मा हमें बताते हैं, ''आप साँस–साँस के साथ उठते–बैठते, सोते–जागते सिमरन करें। हमें दुनिया के किसी भी काम में कामयाब होने के लिए मेहनत और हिम्मत करनी पड़ती है। सच्चा सुख, सच्चा आनन्द नाम के साथ जुड़कर इंसान के अंदर है। क्या कभी मेहनत की, आलस दूर करके देखा?''

मनि तनि तेरी टेक है पिआरे मनि तनि तेरी टेक।।
तुधु बिनु अवरु न करनहारु पिआरे अंतरजामी एक।।

जिनके अंदर विरह होती है वे नाम लेकर अपने सतगुरु के ऊपर सच्चे भरोसे और सिदक के साथ कमाई करते हैं।

कोटि जनम भ्रमि आइआ पिआरे अनिक जोनि दुखु पाइ।।

अब गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''हे परमात्मा! हमने तुझसे बिछुड़कर अनेकों जन्म पाए। जहाँ जाकर भी जन्म लिया अगर पशु के जामें में गए तब भी दु:खी। पक्षी के जामें में गए तब भी दु:खी। साँप के जामें में पेट के बल चलना पड़ा तब भी दु:खी। इंसान के जामें को सारी योनियों का सरदार कहते हैं इसमें भी दु:खी। जब इंसान के जामें की यह हालत है कि रोटी के लिए बिलखते फिरते हैं। शादी नहीं होती तब भी दु:खी। शादी हो जाए अगर मियाँ–बीवी में बेइत्तफाकी हो जाए तब भी दु:खी। कोई बीमारी आ गई या सिर पर कर्ज है तब भी दु:खी। हम जितने भी सुख देखते हैं ये सब आरजी हैं पता नहीं कब बीमारी आ जाएगी कब सुख, दु:खों में तब्दील हो जाएंगे?''

साचा साहिबु विसरिआ पिआरे बहुती मिलै सजाइ।।

गुरु साहब कहते हैं, ''हम हर जामें में **दु:ख** और मुसीबतें क्यों सहते आए? क्योंकि हम परमात्मा को भूल गए। हमारा घर सचखंड है हम अपने घर को भी भूल गए। हमारी आत्मा संसार में आकर शब्द–नाम से बिछुड़कर अपने आपको भूल गई।''

जिन भेटै पूरा सतिगुरु पिआरे सो लागे साचै नाई ।।

अब गुरु साहब कहते हैं, ''जिन्हें पूरा सतगुरु मिल जाता है, वह सच्चे नाम का भेद दे देता है तो हम नाम की कमाई करके सतगुरु की दया–मेहर से अपने घर वापिस सचखंड पहुँच सकते हैं। हमने न कोई कौम छोड़नी है न मजहब तब्दील करना है।'' गुरु नानक साहब कहते हैं:

गुरु जिन्हां का अंधला सिख भी अंधे कर्म करेण।
ओह चलण भाणे आपणे नित झूठो झूठ बुलेण।।

आप महात्माओं की हिस्ट्री पढ़कर देखें! गुरु नानकदेव जी ने कठिन तपस्या की, ग्यारह साल ईंट–पत्थरों का बिस्तर किया। कबीर साहब ने सारी जिंदगी खिचड़ी का आहार किया, बहुत कठिन तपस्या की। कबीर साहब संसार मंडल में पहले ऐसे सन्त आए जो कभी इंसानी जामें से नीचे नहीं गए।

राधास्वामी मत के सेठ शिवदयाल सिंह स्वामी जी महाराज ने छोटी उम्र में ही सत्तरह साल एक अंधेरी कोठरी में अभ्यास किया। इसी तरह बाबा जयमल सिंह जी ने बहुत कठिन तपस्या की। महाराज सावन सिंह जी ने कठोर तपस्या की, आप कई–कई दिन अंदर से बाहर नहीं निकलते थे। इसी तरह मस्ताना जी महाराज कृपाल सिंह के समकाली थे। मस्ताना जी गुरु भक्ति के

वक्त महाराज कृपाल के पास रहे। मस्ताना जी हमेशा यही कहते थे, ''कृपाल सिंह कमाई वाला है, जिसने कमाई देखनी है वह कृपाल सिंह के पास दिल्ली जाए।''

मैंने अपनी जिंदगी का काफी हिस्सा जमीन के अंदर गुफा बनाकर काटा है। मुझे पता है कि भजन करना कितना मुश्किल है, किस तरह मन शेर बनकर खड़ा हो जाता है। भजन करने वाले का हृदय फौलाद की तरह होना चाहिए। गुरु नानकदेव जी से आपकी माता ने पूछा, ''बेटा! रब का नाम लेना कितना आसान है?'' गुरु नानकदेव जी ने आँखें भरकर कहा:

आखड़ औखा सच्चा नाम।

माता! सच्चे नाम की कमाई करनी बहुत मुश्किल है। कहीं काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार है, कहीं लोकलाज है और कहीं आलस चिपटे होते हैं। हम इन चीजों को छोड़कर नाम की तरफ लगते हैं। महात्मा हमें बताते हैं कि मुकाबला बहुत सख्त है मन बड़ा हठीला है लेकिन सेवक की पीठ पर पूरा सतगुरु है वह मदद करता है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

नेह ते पंज जवान, गुरु थापी दित्ती कंड जिओ।

जिस तरह पहलवान अखाड़े में उतरते हैं। अखाड़े में गुरु खड़ा होता है वह शार्गिद की पीठ पर थापी देकर कहता है, ''बेटा! तू बाज है ये तेरे आगे चिड़ियां हैं।'' हमारा अखाड़ा तीसरा तिल है। काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की स्थूल गाँठ हमारी आँखों के पीछे है, सतगुरु भी इसी जगह बैठा है।

जब सेवक सिमरन के जरिए अपने ख्याल को इकट्ठा करके तीसरे तिल पर पहुँचता है तब गुरु भी शिष्य की पीठ पर खड़ा होता है। चाहे ये पाँच हैं शिष्य अकेला है लेकिन कोई करके देखे! गुरु साँस–साँस के साथ शिष्य की संभाल करता है। दुनियादारों के लिए काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार ये ताकतें शेर हैं लेकिन मालिक के भक्तों के आगे ये चूहे की तरह हैं। जैसे बिल्ली को देखकर चूहा सहम जाता है इसी तरह भक्त को देखकर ये पाँचों सहमे रहते हैं। गुरु नानक साहब कहते हैं:

जगत पास से लेते दान गोविंद भक्त को करे सलाम।

तिना पिछै छुटीऐ पिआरे जो साची सरणाइ।।

जीव की ताकत नहीं कि यह सचखंड पहुँच जाए परमात्मा से मिल जाए। जिस तरह बच्चा अपने आप बी.ए, एम.ए की डिग्री प्राप्त नहीं कर सकता उसे टीचर की सोहबत करनी पड़ती है टीचर की सहायता लेनी पड़ती है। इसी तरह ये महान आत्माएं सचखंड से हमें लेने के लिए आती हैं। जो लोग लोक–लाज छोड़कर इनकी शरण ले लेते हैं वे भी इनके पीछे छूट जाते हैं।

मिठा करि कै खाइआ पिआरे तिनि तनि कीता रोगु।।
कउड़ा होइ पतिसटिआ पिआरे तिस ते उपजिआ सोगु।।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''हम विषय–विकार, शराबों–कबाबों के रस को मीठा समझकर खाते हैं लेकिन जितने भोग भोगते हैं उतना ही बीमारियों का हिसाब–किताब देना पड़ता है फिर हम रोते–पीटते हैं। विषय–विकारों के स्वाद पहले तो मीठे लगते हैं लेकिन जिंदगी में ही ये हमें फीके लगने लग जाते

हैं। बाद में इन विषय–विकारों में कोई दिलचस्पी नहीं रहती कोई स्वाद नहीं आता।'' गुरु नानक साहब कहते हैं:

भोगों रोग सो अंत विगोऐ, सो आए जाए दुख पाऐंदा।

भोग भुंचाइ भुलाइअनु पिआरे उतरै नही विजोगु।।
जो गुर मेलि उधारिआ पिआरे तिन धुरे पइआ संजोगु।।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''जिन्हें पूरे गुरु मिल जाते हैं जो गुरु से नामदान प्राप्त करते हैं उनका धुर से ही संजोग लिखा होता है। हम अपने आप न संगत में जा सकते हैं और न नाम ही प्राप्त कर सकते हैं। सब धर्म परमात्मा की और नाम की महिमा करते हैं। हमें पता ही है कि हम किस तरह परमात्मा के नाम पर इकट्ठे नहीं हो सकते। अलग–अलग कौमें, संप्रदाय इसलिए बन गए क्योंकि हम सच्चे नाम के साथ नहीं जुड़े। अल्लाह–अल्लाह, वाहेगुरु–वाहेगुरु, राम–राम सच्चे नाम नहीं हैं, ये लफ्ज़ सच्चे नाम की महिमा करते हैं।''

माइआ लालचि अटिआ पिआरे चिति न आवहि मूलि।।

आप कहते है, ''काल ने जीव के अंदर माया का इतना लोभ पैदा कर दिया कि यह बेचारा जीव माया के नीचे ही दब गया, सारी जिंदगी माया इकट्ठी करने में ही लगा देता है।''

जिन तू विसरहि पारब्रह्म सुआमी से तन होए धूड़ि।।
बिललाट करहि बहुतेरिआ पिआरे उतरै नाही सूलु।।

आप कहते हैं, ''हम भेड़, बकरी और गायों के सिर पर छुरियां चलाते हैं ये बेचारी चीखती–चिल्लाती हैं। कोई इनकी

चीख–पुकार सुनता है, कोई अदालत है जहाँ जाकर ये अपना **दु:ख** सुना सकें? क्या हमने सोचा है कि कर्मों की वजह से कभी हम इनके नीचे हों और इनके हाथ में छुरी हो तो क्या हम सुख महसूस करेंगे? हो सकता है कभी ये जानवर हमसे अच्छे हों सेठ–साहूकार हों और आज कर्मों की वजह से ये जानवर बनकर गला कटवा रहे हैं।'' कबीर साहब कहते हैं:

बकरी पाती खात है ताकी काडी खाल।
जो बकरी को खात है तिनकी कौन हवाल।।

पल्टू साहब कहते हैं:

मुसलमान करें जिव्हा, हिन्दु मारे झटका।
खाए दोऊ मुरदार फिरत है दोऊ भटका।
वे पूरव वे पश्चिम ताकते अरे हां रे पल्टू।
मस्जिद में जाए दोऊ सिर मारते।।

गुरु नानक साहब कहते हैं:

पाप करे पंचा के वसरे, तीर्थ न्हाए कहे सब उतरे।

हम पाप करके मंदिर, मस्जिद, चर्च में जाकर उन पापों को बख्शवाते हैं। आप कहते हैं:

बहुर कमावे होय निसंग, जमपुर बाध खड़े कलंक।

महात्मा हमें बताते हैं अगर कोई कत्ल करके चर्च या गुरुद्वारे में जाकर बख्शवाए तो वह कभी बख्शा नहीं जाएगा। वक्त की सरकार उसे जरूर दंड देती है। मुनसिफ यही कहता है, ''भ्रावा! अब तो इसका दंड भोग आगे से मत करना।'' महात्मा हमें बताते हैं कि माँस का बदला माँस ही देना पड़ता है। आप जिसका माँस खाएंगे वह आपका माँस जरूर खाएगा।

महात्मा सदना कसाई थे, आप माँस बेचते थे। एक दिन किसी बड़े आदमी को माँस की जरूरत पड़ी। वह सदना कसाई के पास माँस लेने के लिए आया उस समय दिन छिप चुका था। उन दिनों आज की तरह फ्रिज वगैरहा के साधन नहीं थे कि किसी चीज को काटकर रख देने से वह वैसी ही पड़ी रहेगी।

सदना कसाई ने उस बड़े आदमी को जवाब दे दिया लेकिन वह उसका रोज का ग्राहक था। उसने सदना से कहा अगर तू आज मुझे माँस नहीं देगा तो फिर मैं तेरे पास नहीं आऊंगा। आखिर सदना कसाई ने मजबूर होकर सोचा कि मैं इसे बकरे का गुप्त अंग काटकर दे देता हूँ। जब वह बकरे का गुप्त अंग काटने लगा तो बकरा कह–कहाकर हँसा। सदना ने बकरे से पूछा कि तू क्यों हँस रहा है? बकरे ने कहा, ''कई बार तूने मुझे मारा और कई बार मैंने तुझे मारा लेकिन आज तू मेरे साथ नया कर्म बनाने लगा है। अब मैं चार पहर तड़पकर मरुंगा फिर इसी तरह तुझे तड़पना पड़ेगा।''

सदना की हिस्ट्री में आता है कि उसने कसाई का काम छोड़ दिया। पूरे सन्तों से नामदान प्राप्त किया और सदना परमगति को प्राप्त हुआ। गुरु ग्रंथसाहब में सदना कसाई का शब्द है।

कबीर साहब कहते हैं, ''ये काल की चलाकियां हैं कि किसी कौम को कह दिया कि तुम्हारे लिए गाय का माँस ठीक नहीं सुअर का माँस ठीक है और किसी कौम को कह दिया कि तुम्हारे लिए सुअर का माँस ठीक नहीं गाय का माँस ठीक है।''

माँस माँस सब एक है मुर्गी हिरनी गाय।
आँख देख नर खात है बाधे जमपुर जाए।।

माँस एक ही तरीके से माता–पिता के संजोग से पैदा होता है। जिसने किसी जानवर का माँस खा लिया उसने इंसान का भी माँस खा लिया, उसने सारे ही माँस खा लिए।

जे गुर मेलि सवारिआ पिआरे तिन का रहिआ मूलु।।

आप कहते है, ''जिन्हें गुरु मिल जाता है, गुरु नाम के साथ जोड़ देता है उनकी आत्मा हरी–भरी हो जाती है; वे वापिस अपने घर सचखंड पहुँच जाते हैं।''

साकत संगु न कीजई पिआरे जे का पारि वसाइ।।
जिसु मिलिऐ हरि विसरै पिआरे सुो मुहि कालै उठि जाइ।।

अब गुरु साहब हमें समझाते हैं, ''हमारा मन लज्जत का आशिक है इसके ऊपर सोहबत का बहुत जल्दी असर होता है। अगर यह शराबी कबाबियों के पास बैठता है तो शराब पीने की आदत पड़ जाती है अगर नाम जपने वालों के पास बैठता है तो नाम जपने की आदत पड़ जाती है।'' कबीर साहब कहते हैं:

साकत संग न कीजिए दूरो जाईऐ भाग।
वासन कारो परसिए तो कुछ लागे दाग।।

हमें साकत पुरुषों का संग नहीं करना चाहिए। साकत पुरुष परमात्मा की मौज को नहीं समझते। साकत शराबों–कबाबों में लगे हुए हैं और परमात्मा को भूले हुए हैं। आप भी साकत की संगत करके परमात्मा को भूल जाएंगे। साकतों को जो सजा मिलनी है आप भी उस सजा के हकदार हो जाएंगे।

मनमुखि ढोई नह मिलै पिआरे दरगह मिलै सजाइ।।

आप कहते है, ''मनमुख को परमात्मा दरगाह में घुसने नहीं देता। मनमुख को धर्मराज के सामने पेश होना पड़ता है और धर्मराज उसे सजा दे देता है।''

जो गुर मेलि सवारिआ पिआरे तिना पूरी पाइ।
संजम सहस सिआणपा पिआरे इक न चली नालि।।

आप कहते हैं, ''चाहे हम कितने भी चतुर या स्याने हैं लेकिन हमारा सब कुछ यहीं रह जाना है।''

जो बेमुख गोबिंद ते पिआरे तिन कुलि लागै गालि।।

अब गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''जो परमात्मा की भक्ति नहीं करते जिनके अंदर परमात्मा से मिलने की तड़प नहीं वे अपने आपको तो दाग लगा लेते हैं और अपनी कुल को भी दाग लगा जाते हैं।'' गुरु रामदास जी महाराज कहते हैं:

जिन हर हृदय नाम न वसयो तिन मात कीजे हर वांझा।

होदी वसतु न जातीआ पिआरे कूडु न चली नालि।।

महात्मा कहते हैं, ''परमात्मा आपके अंदर है। परमात्मा ही आपको जीवन दे रहा है। जब परमात्मा आपके शरीर में से निकल जाएगा तो आप मिट्टी की ढ़ेरी हो जाएंगे। हम दिन–रात झूठ बोल रहे हैं कि परमात्मा हमारे अंदर नहीं। ये चीजें हमारे साथ नहीं जाएंगी हमारे साथ तो परमात्मा ने जाना है। परमात्मा तो आपके जिस्म के अंदर है अगर कोई सच्चे से सच्चा मंदिर, ठाकुर द्वारा या चर्च है तो वह आपका शरीर है।''

सतिगुरु जिना मिलाइओनु पिआरे साचा नामु समालि।।
सतु संतोखु गिआनु धिआनु पिआरे जिस नो नदरि करे।।

जिन पर परमात्मा मेहर करता है उन्हें पूरे गुरु से मिलवा देता है। गुरु उन्हें नाम के साथ जोड़ देता है, नाम की कमाई करने से हमारे अंदर सत–संतोख, ज्ञान–ध्यान सब कुछ ही आकर टिक जाते हैं।

अनदिनु कीरतनु गुण रवै पिआरे अंमृति पूर भरे।।
दुख सागरो तिन लंघिआ पिआरे भवजलु पारि परे।।
जिसु भावै तिसु मेलि लैहि पिआरे सेई सदा खरे।।
संम्रथ पुरखु दइआल देउ पिआरे भगता तिस का ताणु।।
तिसु सरणाई ढहि पए पिआरे जि अंतरजामी जाणु।।
हलतु पलतु सवारिआ पिआरे मसतकि सचु नीसाणु।।
सो प्रभु कदे न वीसरै पिआरे नानक सद कुरबाणु।।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज ने इस छोटे से शब्द में सन्तमत को बड़े प्यार से समझाया कि सन्तमत सब धर्मों का आदर करता है। सन्तमत किसी कौम या मजहब को नहीं तोड़ता। सच्चे नाम की प्राप्ति वही करते हैं जिन पर परमात्मा मेहर करता है। जब परमात्मा मेहर करता है तो हमें सतगुरु की संगत में लाता है।

आखिर में आप यही अरदास करते हैं, ''हे परमात्मा! तू हम पर दया–मेहर कर। हमें सतगुरु से मिलवा और नाम बख्श ताकि हम भी खोटे से खरे होकर तेरी दरगाह में परवान हो जाएं।''

सतसंग समाप्त है, हम यहाँ आकर बहुत खुश है। इन प्रेमियों ने बहुत हिम्मत की, अपने सतगुरु का आसरा लेकर जंगल में मंगल बनाया। जिन प्रेमियों ने इनके साथ मिलकर कार्यक्रम बनाया सेवा की सहयोग दिया हम उनके भी धन्यवादी हैं।

1 जुलाई 1980

***

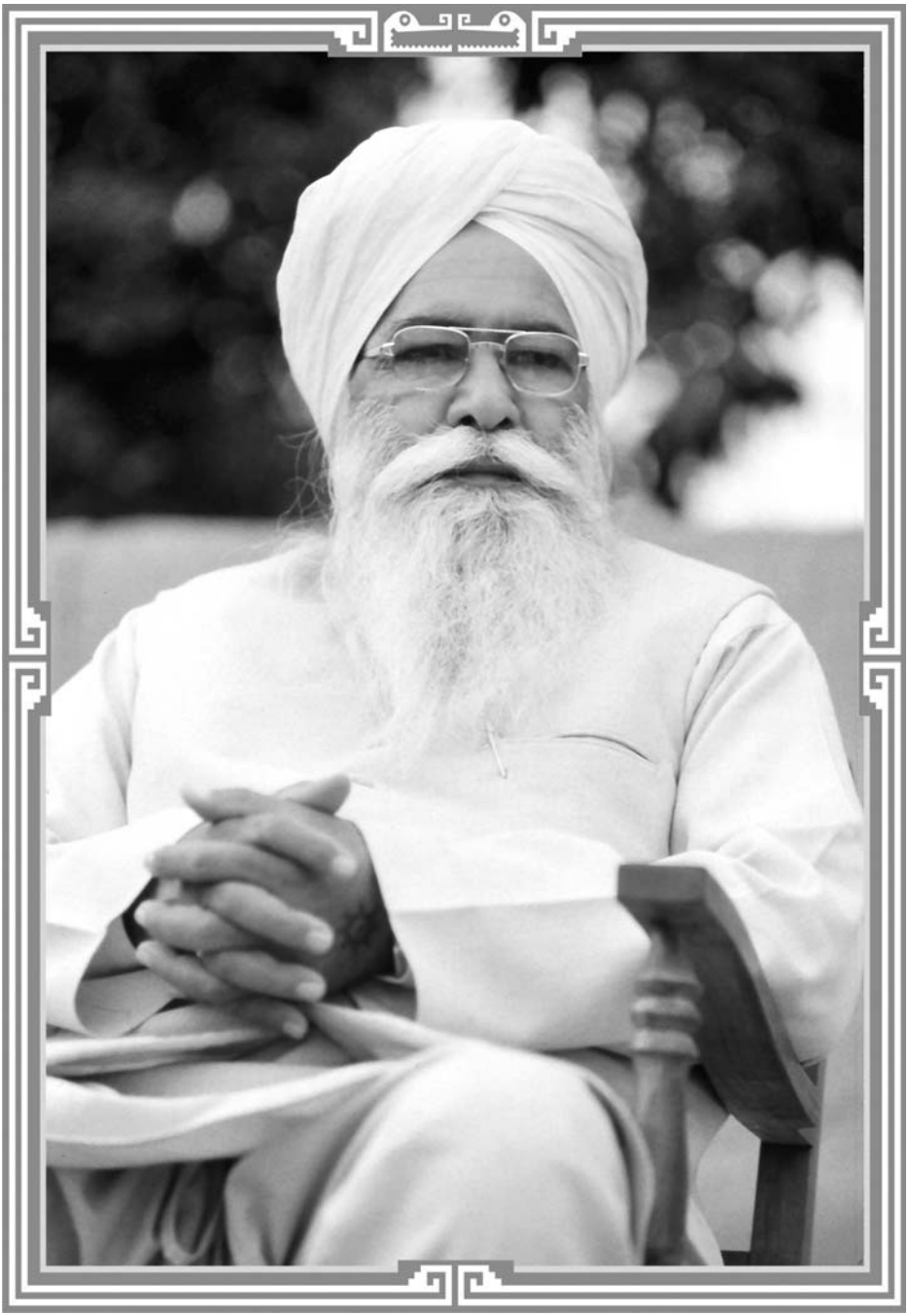

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सवाल–जवाब

मियामी, फ्लोरिडा

एक प्रेमी:– *क्या सभी आत्माएं बराबर हैं सबकी उत्पति एक ही तरह से हुई है या आत्माएं अलग–अलग हैं। जैसे कि काल अलग है वैसे ही आत्माएं अलग–अलग दर्जे की हैं या एक ही हैं?*

बाबा जी:– सभी आत्माएं परमात्मा की अंश हैं। सभी आत्माओं का आदि सच्चखंड है। सभी आत्माएं परमात्मा से बिछुड़कर ही इस माया के जाल में फंसी हुई है।

एक प्रेमी:– *महाराज जी! क्या अच्छे कर्मों की वजह से ही आदमी ऊपर के मंडलों में जा सकता है या दुनिया के सारे बंधनों को मुक्त करना ही काफी है?*

बाबा जी:– कर्म हमें मुक्ति नहीं दिलवा सकते चाहे हम अच्छे कर्म करें या बुरे कर्म करें। अगर हम अच्छे नेक कर्म करते हैं तो सेठ साहूकार बनकर आ जाते हैं, दुनिया की हुकूमत हासिल करने के लिए लीडर बनकर आ जाते हैं। झोंपड़ी से बिस्तर उठाकर महल में लगा लेते हैं। हाथ से झाड़ू निकल जाता है हुकूमत की बागडोर मिल जाती है। अगर हमारे बुरे कर्म हैं तो हमारे लिए नर्क और चौरासी तैयार ही होते हैं लेकिन अच्छे या बुरे कर्म हमें मुक्ति नहीं दिलवा सकते।

एक प्रेमी:– *हम सबकी आत्माएं सच्चखंड से क्यों बिछड़ गई?*

बाबा जी:– सबसे अच्छा तो यह है कि आप अंदर जाएं वहाँ जाकर यह मसला हल करें तो बहुत अच्छा है। स्वामी जी

महाराज इस गुत्थी को बड़े प्यार से खोलते हैं। परमात्मा आत्मा से कहता है कि मैंने काल को जान बूझकर रचा है अगर मैं काल को न रचता तो आत्माएं बस में नहीं रहती। जब आत्माएं काल के देश में आकर दुखी हुई तब आत्माओं ने सतपुरुष को पुकारा। सतपुरुष इंसान के जामें में आकर आत्माओं को उपदेश देता है। उस समय आत्माएं सतपुरुष से कहती हैं कि हम किस तरह तुझ पर भरोसा करें कि तू फिर से हमें काल को न सौंप दे? सतपुरुष आत्माओं के साथ वायदा करता है कि एक बार यह मौज जरूर थी लेकिन अब जो आत्माएं मेरे साथ चली जाएंगी उन्हें मैं काल के देश में नहीं भेजूंगा।

अनुराग सागर छप चुका है। मैं आपको प्यार से सलाह देता हूँ कि आप अनुराग सागर पढ़े। अनुराग सागर में कबीर साहब ने काल और दयाल का भेद खोलकर लिखा है जिससे काफी मंडलों का ज्ञान होता है। आशा करते हैं जो प्रेमी अंग्रेजी जानते हैं वे सतसंग करते वक्त अनुराग सागर में से थोड़ा बहुत प्रेमियों को सुनाया करें।

एक प्रेमी:– *जब कोई सारे कर्मों का भुगतान कर लेता है तो क्या वह मर जाता है?*

बाबा जी:– हमारे तीन प्रकार के कर्म होते हैं प्रालब्ध, संचित और क्रियमान। प्रालब्ध वे कर्म हैं जो हम आज भोग रहे हैं जिनकी वजह से हमारी आत्मा शरीर में ठहरी हुई है। संचित वे कर्म हैं कि जब से हमारी आत्मा परमात्मा से बिछुड़ी है हम तब से कर्म करते आ रहे हैं, हर जामें में बहुत से कर्म भोगने रह

जाते हैं उन्हें संचित कर्म कहते हैं। संचित कर्मों का स्टाक ब्रह्म में जमा होता रहता है। क्रियमान वे कर्म हैं जो हम अब कर रहे हैं। अगर किसी जामें में हम सारे कर्म भोग भी लें तो काल ब्रह्म में जमा संचित कर्मों के स्टाक में से कर्म लेकर फिर जन्म दे देता है। शब्द–नाम की कमाई के बिना कर्मों का सिलसिला खत्म नहीं होता।

इसे हम एक उदाहरण से समझ सकते हैं कि जिस तरह एक जमींदार खेती बीजता है तो छह महीने बाद उसकी फसल पककर घर आ जाती है। वह फिर खेती बीजता है छह महीने बाद फिर फसल पककर घर आ जाती है। जमींदार उसमें से बचत कर लेता है, घर में दाने रख लेता है या उसके पैसे बैंक में जमा कर देता है। कई बार खेती में नुकसान हो जाता है तो उसके घर में दानों का स्टाक होता है या बैंक में पैसा जमा होता है जिससे वह अपना खर्च चला लेता है।

इसी तरह किसी जामें में हमारे प्रालब्ध कर्मों का सिलसिला खत्म हो भी जाए तो काल हमारे पिछले संचित कर्मों का खजाना ब्रह्म में से लेकर फिर जन्म दे देता है। ब्रह्म में जमा संचित कर्मों का स्टाक अवतारों का भी खत्म नहीं होता अगर उनके कर्म खत्म हो जाते तो वे इस संसार में क्यों आते। कर्मों का जाल बहुत जटिल है, यह हर एक को भुगतना पड़ता है। नाम ही एक ऐसी ताकत है जो हमारे सारे कर्मों के हिसाब को बेदाग कर देता है।

जब सतगुरु हमें नाम देते हैं तो वे हमारे प्रालब्ध कर्मों को नहीं छेड़ते। सतसंगों के जरिए और नामदान के वक्त भी वे हमें क्रियमान कर्मों के बारे में समझाते हैं कि अब बुरे कर्म न करें,

इन्हें न बिगाड़े। सतगुरु नामदान देते समय अपनी दया दृष्टि से संचित कर्मों का खजाना समाप्त कर देते हैं, सेवक को वे कर्म नहीं भुगतने पड़ते। सतगुरु प्रालब्ध कर्मों को भुगतने में भी हमारी मदद करते हैं। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

सतगुरु शरण गहो मेरे प्यारे कर्म जुगात चुकाई।

अगर आपने संचित कर्मों का स्टाक खत्म करना है तो आप सबसे पहले सतगुरु की शरण में जाएं। सतगुरु आपको उन कर्मों से माफी दिलवा सकते हैं क्योंकि सतगुरु इस मंडल पर दया लेकर आते हैं।

एक प्रेमी:– *आत्मा किस समय शरीर के अंदर आती है, जन्म के समय या जब बच्चा ठहर जाता है?*

बाबा जी:– मैं आपको यह बात थोड़े में ही समझा देता हूँ। जब शरीर की रचना बननी शुरू होती है उस वक्त आत्मा शरीर में दाखिल होती है अगर जन्म के समय ही आत्मा शरीर में प्रवेश करे तो पहले माता के पेट में कोई हरकत न हो। तजुर्बा यह बताता है कि बच्चा माता के पेट में पहले से ही हरकत करता है। कई बार महीने पूरे होने से पहले किसी कारण से बच्चा गिर जाता है, बेजान हो जाता है तो हरकत करने से हट जाता है।

एक प्रेमी:– *एक आदमी जो नामलेवा है उसकी अपनी मौज और बे नामलेवा की अपनी मौज में क्या फर्क है?*

बाबा जी:– नामलेवा सतसंगी को हमेशा अपनी मौज छोड़ देनी चाहिए उसे सतगुरु की मौज में रहना चाहिए। बेसतसंगी नामलेवा नहीं वह तो अपनी ही मौज में रहता है अगर दोनों अपनी मौज में रहते हैं तो सतसंगी और बेसतसंगी में कोई फर्क नहीं रहा।

आप सबको पता है जब मैं संसार यात्रा पर गया, मैं जिस भी मुल्क में गया मैंने सब जगह यही कहा कि मेरा अपना कोई मिशन नहीं मेरी अपनी कोई मौज नहीं। मैं यहाँ अपने गुरुदेव की मौज में आपकी सेवा करने के लिए आया हूँ। मैं अपने गुरुदेव का संदेश आप तक पहुँचाने के लिए आया हूँ। नामलेवा वही कहलवा सकता है जो अपनी मौज को छोड़कर गुरु की मौज को अपनाए।

एक प्रेमी:– *आप हमें किसी सन्त के साथ प्राईवेट इंटरव्यू के बारे में कुछ बताएंगे?*

बाबा जी:– जब आप किसी सन्त के पास प्राईवेट इंटरव्यू के लिए जाते हैं तब आपको कुछ भी सोचने की जरूरत नहीं क्योंकि वह महान आत्मा आपके अंदर की हर बात को जानती है। कुछ अरसा पहले मेरे पास एक पश्चिमी प्रेमी आया उसने तकरीबन आधा घंटा भाषण दिया, मैं बहुत आराम से सुनता रहा। उसने मुझे बोलने का मौका ही नहीं दिया आखिर उसने कहा कि मैं जरूरत से ज्यादा ही बोल गया हूँ।

हम उस महान आत्मा के पास अपनी किसी समस्या को हल करवाने या उसकी राय लेने के लिए जाते हैं क्योंकि उसकी राय परमात्मा की राय होती है। वह हमें जो नेक सलाह देगा हमारे फायदे के लिए ही देगा। आप इंटरव्यू में आकर देख सकते हैं कि प्रेमी बड़े–बड़े पर्चे देते हैं जिसमें उन्होंने सवाल करके खुद ही जवाब दिए होते हैं; मुझे जवाब देने का मौका नहीं होता। मैं चुप करके बैठा रहता हूँ। कई बार दिल में दया आती है कि यह मेरे पास अपना फायदा उठाने के लिए आया था लेकिन सवाल

करके खुद ही जवाब देता जाता है तो मुझे इतना कुछ सुनाने की क्या जरूरत थी?

हमें हमेशा इंटरव्यू में वह बात पूछनी चाहिए जिसके बारे में हम नहीं जानते ताकि वह हमें प्यार से समझा सके। इंटरव्यू के बारे में मैं आपको प्यार से सलाह दूंगा कि आप जब भी सन्त–सतगुरु के पास जाएं सबसे पहले आप जो सवाल करते हैं उसके बारे में सोचें अगर आपको उसका जवाब पता है तो फिर आप सवाल क्यों करते हैं? आप वह सवाल पूछें जिसके बारे में आपको पता नहीं, वह आपको समझाएगा।

कई प्रेमियों का ख्याल होता है कि अगर उन्होंने ज्यादा नहीं पूछा तो उन्हें कम टाईम मिलेगा। जिनके सवाल नहीं होते मैं उन्हें भी बराबर समय देता हूँ। अगर आपको कोई पारिवारिक समस्या है, आप भजन–सिमरन की तरक्की या रूकावट के बारे में पूछना चाहते हैं तो प्राईवेट इंटरव्यू में बड़े शौंक से पूछ सकते हैं।

सन्तों का आत्मिक और शारीरिक ज्ञान बहुत ऊँचा होता है। वे जानते हैं कि शरीर में कितनी नाड़ियां हैं, ये क्या–क्या काम करती हैं? औरतों के अंदर कितने खाने हैं, मर्दों के अंदर कितने खाने हैं? हम जो पानी पीते हैं वह किस तरफ जाता है, हम जो अन्न खाते हैं वह किस तरफ जाता है? उन्हें पूरी जानकारी होती है। आप जब भी सवाल करें उन्हें जानीजान समझकर करें कि ये सब कुछ जानते हैं।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले

अमृतवेला

मैं आपको रोज ही बताता हूँ अगर हम प्रेम-प्यार से किसी दुनियादार इंसान या परिवार का काम करते हैं तो वे भी खुश होते हैं। जिस घर में या समाज में प्यार खत्म हो जाए वहाँ क्रोध डेरा लगा ले तो वह परिवार, समाज भी अशान्त हो जाता हैं, दुख की नगरी बन जाता है। अगर किसी परिवार ने अपने घर को स्वर्ग जैसा बनाना है तो उस परिवार को प्रेम-प्यार का आसरा लेना चाहिए।

प्यार एक ऐसी वस्तु है कि यह जिस परिवार या समाज में डेरा लगा ले वे खुद तो शान्त होते ही हैं उनके आस-पास का वातावरण भी प्यार का बन जाता है तो क्यों न प्यार का आसरा लिया जाए? हम प्यार को अपनाएं। अगर इस प्यार से इतना दुनियावी फायदा होता है तो क्यों न हम प्रेम-प्यार और भरोसे से अपना अभ्यास करें।

परमात्मा सदा ही दयालु है, वह हमसे क्यों खुश नहीं होगा? वह जरूर खुश होगा। हम तभी प्यार पैदा कर सकते हैं अगर हम अपने मन में शान्ति पैदा करें। शान्ति का मतलब यही है कि हमारे मन में रोज जो संकल्प-विकल्प उठ रहे हैं वे हमें परेशान कर रहे हैं। यह इस तरह है जैसे किसी इंसान को बिच्छु काट जाए तो वह बेहोश हो जाता है।

मैं ऐसे बहुत से क्रोधी आदमियों से मिला हूँ, जिनके ऊपर क्रोध का जोर हो जाता है। वे जब बोलते हैं तो उन्हें यह

पता नहीं चलता कि उन्होंने अपने मुँह से क्या बोला है? जब उनका मन शान्त हो जाता है तब वे कहते हैं, ''आप जैसा कहें मैं वैसा कर लेता हूँ, मैंने तो कुछ कहा ही नहीं।'' अब आप देखें! वह कौन सी चीज है जो हमें बेदिल कर देती है?

सेवादार हरबंस सिंह आपके पास ही रहता है। जब इसके पिता ने अपना तजुर्बा बताया तो यह भी पास ही बैठा था। इसके पिता ने कहा, ''मुझे जब क्रोध का दौरा पड़ता है तो मैं आठ पहर बेहोश हो जाता हूँ मुझे पता ही नहीं लगता कि कौन अपना है कौन पराया है।'' जिन्हें क्रोध आठ-आठ पहर सुरत नहीं लेने देता अगर उस समय उनके पास कोई आदमी आ जाए तो उसे अपना पराया एक ही दिखाई देता है। हमें इस मर्ज से बचना चाहिए।

परमात्मा सावन-कृपाल कुलमालिक ने अपनी बहुत भारी दया करके हमें यह एक घंटा भजन-अभ्यास के लिए दिया है। आज का युग अपनी-अपनी समस्याओं से घिरा हुआ है। कोई धन-दौलत, औलाद, मान-बड़ाई या ऊँचा ओहदा करके सुखी नहीं। वही आदमी सुखी है जिसके मन को शान्ति है, जो परमात्मा के साथ जुड़ गया है। बाकी हम सभी दुखी हैं क्यों न हम उस दयालु गुरु का धन्यवाद करें जिसने हमें इस सड़ती-तपती दुनिया के अंदर अपने नाम की भक्ति का मौका दिया है। हमें चाहिए कि हम इस मौके से पूरा फायदा उठाएं।

हम अंदर जाकर ही गुरु का सच्चा धन्यवाद कर सकते हैं। उसने हमारे ऊपर कितनी भारी दया की है जब तक हम

अंदर नहीं जाते हमें पता नहीं चलता कि हमारे ऊपर कितनी दया हो रही है, हमारे कितने कर्म कट रहे हैं, हमारी सफाई हो रही है? इसलिए हमने शान्त रहना है।

मैं बताया करता हूँ कि सन्त-महात्मा इस संसार में दुनिया की सही तस्वीर खींचकर रखते हैं लेकिन उनके बताने का भाव किसी को ताना मारना नहीं होता। वे इस दुनिया को इन पाँचो डाकुओं के हाथ से दुखी और परेशान होते हुए देखते हैं क्योंकि ये पाँचों डाकु हर आदमी की रूहानियत की पूँजी को लूट रहे हैं। सन्तों के अंदर दया होती है वे अपने बच्चों की बेहतरी सोचते हैं कि ये किसी न किसी तरह सुधर जाएं और आसानी से अपने घर वापिस चले जाएं।

काल इन पाँचों में से कोई न कोई ताकत हमारे पीछे लगाए रखता है। किसी के पीछे काम, किसी के पीछे क्रोध किसी के पीछे लोभ किसी के पीछे मोह और किसी के पीछे अहंकार के डाकु लगा देता है। सन्त जब दुनिया को परेशान देखते हैं तो वे हमें बताते हैं कि आपकी रूहानियत का कितना भारी नुकसान हो रहा है, आप लुटे जा रहे हैं। आप अंदर शब्द नाम के साथ जुड़ें आपको शान्ति आ जाएगी। रोज-रोज अंदर अभ्यास करने से आप तरक्की करेंगे और इन पाँचों डाकुओं की जहर घटनी शुरू हो जाएगी। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

डंक सहत फिर फिर पछतात, जहर हलाहल नित ही खावे।

हम अभ्यास भी करते हैं लेकिन सन्त जो परहेज बताते हैं हम वह नहीं करते, हर पल जहर खाते हैं और पछताते हैं।

हमारे गुरुदेव परमपिता कृपाल ने हमें डायरी रखने के लिए प्रेरित किया। आप डायरी रखने पर बहुत जोर दिया करते थे, डायरी एक किस्म का रोजनामचा है। आर्मी में तो रोजाना सबका रोजनामचा भरा जाता है, हर रोज हर किसी की जिंदगी लिखी जाती है। अगर दिन में कोई गलती हुई है या जवान ने कोई अच्छा काम किया है तो वह भी शीटरोल में लिखा जाता है। जिस वक्त अफसर ने ईनाम देना होता है तो पहले जवान की शीटरोल मंगवाई जाती है। अगर कोई गलती हुई है तो वह गलती लाल स्याही से लिखी जाती है। अगर शीटरोल में कुछ लाल स्याही से लिखा गया है तो अफसर गौर से देखता है कि क्या लिखा है इसने क्या गलती की है।

मैं बताया करता हूँ कि अब अफसर हमें किस तरह ईनाम दे जबकि हमने खुद ही अपनी शीटरोल गंदी की है। हम वह मौका खो देते हैं अफसर अफसोस से कहता है अगर तू गलती न करता तो मैं आज तुझे जरूर ईनाम देता। इसी तरह हम अपनी रोजाना की गलतियां डायरी लिखकर सुधार सकते हैं।

महाराज जी कहा करते थे कि आपने सुबह से लेकर शाम तक जो गलतियां की जैसे किसी का बुरा सोचा, पैसे से किसी का बदला लेना चाहा, कितनी निन्दा-चुगली की और सारे दिन में कितना भजन-अभ्यास किया; आप अपने मन का लिहाज न करें शाम को डायरी में लिखें।

पश्चिम के एक अंग्रेज प्रेमी ने मुझसे सवाल किया कि महाराज कृपाल ने डायरी रखने के लिए कहा है, आप डायरी

के बारे में कुछ कहें। मैंने उसे बड़े प्यार से समझाया कि महाराज कृपाल ने बहुत दया करके हमें जिंदगी का रोजनामचा बनाने के लिए कहा है इससे हम सुधर सकते हैं, अपना नुकसान देख सकते हैं। मैं इस बारे में यही कहूंगा कि जो गलती आज हो गई है वह गलती फिर न हो। ऐसा नहीं कि हमने डायरी ली और भर ली। मेरे पास ज्यादातर ऐसे प्रेमियों की डायरियां आती हैं जिनमें महीने भर की वही गलतियां लिखी होती हैं। हमने महाराज जी का यह हुक्म तो मान लिया कि डायरी भरनी है लेकिन यह नहीं सोचा कि ये गलतियां भी छोड़नी हैं।

गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज रोपड़ के इलाके रूपनगर में गए। उस गाँव को चोरों का गाँव कहते थे। जिस जगह के जैसे लोग ज्यादा हों उस जगह का वैसा ही नाम पड़ जाता है। वहाँ गुरु गोबिंद सिंह जी ने सतसंग किया कि कोई चोर की हामी नहीं भरता, चोरी करने वाले का अच्छा नहीं हो सकता। उन लोगों ने महाराज जी से विनती की कि हम तो बहुत कुछ करते हैं। गुरु साहब ने कहा कि आप लोग लिस्ट बनाएं।

वह जमाना पढ़ाई-लिखाई का नहीं था। जैसे हमारा राजस्थान पढ़ाई-लिखाई में पिछड़ा हुआ है इसलिए हम यहाँ डायरी का प्रचार नहीं करते। मैंने पुराने जमाने के कई बुजुर्ग देखे हैं वे डायरी घर ले जाकर धूप देना शुरू पर देते हैं। महीने दो महीने बाद डायरी लाकर कह देते हैं कि हमने इस डायरी को धूप दी और इसके आगे घी की जोत भी जलाई। अगर वे लोग पढ़े-लिखे हों तो वे डायरी भरें और उससे फायदा उठाएं।

जब उस गांव के लोगों ने कहा कि महाराज जी! हम पढ़े-लिखे नहीं। सन्तों के समझाने का अपना-अपना तरीका होता है। गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज ने कहा कि जब आपसे गलती हो जाए तो आप एक कंकर उठाकर रख दें। उन्होंने कहा ठीक है। सारे गाँव के लोगों ने इसी तरह किया कि जब गलती हो जाए तो एक कंकर उठाकर रख दें। कुछ ही दिनों में कंकड़ों के बड़े-बड़े ढ़ेर हो गए।

उस गांव के लोगों ने पंचायत की। वे लोग मिलकर चोरी करते थे गिरोह बनाते थे तो उनके लिए इकट्ठे होना क्या मुश्किल था। उन्होंने विचार बनाया कि हम परमात्मा को कैसे हिसाब देंगे? यहाँ तो बड़े-बड़े ढ़ेर लग गए हैं। क्यों न हम चोरी करना छोड़ दें न इतने बड़े-बड़े ढ़ेर जमा हों न बुरे कर्म बनें।

जब गुरु गोबिंद सिंह जी ने फिर वहाँ जाकर सतसंग किया, आपने पूछा कि मैंने आपको जो कहा था आपको उसकी समझ आई आपने कोई हिसाब-किताब रखा? उन लोगों ने कहा कि आपके जाने के बाद हमने हिसाब रखा था कुछ ही समय में कंकड़ों के बड़े-बड़े ढ़ेर लग गए फिर हम सबने फैसला किया कि न हम चोरी करें न बुराई करें न इतने बड़े-बड़े ढ़ेर जमा हों क्योंकि आपने बताया था कि इनका भुगतान तो हमने ही करना है।

महाराज कृपाल ने हमारे ऊपर दया की कि आप रोज डायरी लिखें। वही इंसान भाग्यशाली है जो अपनी गलती मानता है जो गलती न माने उसका सुधार कैसे हो सकता है?

महाराज सावन सिंह जी अपनी जिंदगी का एक वाक्या बताया करते थे कि नौकरी के दौरान आपने एक अंग्रेज से चार्ज लिया। चार्ज लेने के बाद आपने उससे कहा, ''मैं स्कूल से नया-नया आया हूँ अगर मुझमें कोई गलती है तो आप मुझे बताएं मैं उसे स्वीकार करूंगा।'' साहब ने कहा कि अब तो मैं चार्ज दे चुका हूँ। महाराज जी ने कहा, ''मैं कोई चीज नहीं माँग रहा मैं तो यह कह रहा हूँ अगर मुझमें कोई गलती है तो आप मुझे बताएं।'' उस साहब ने कहा, ''यह तो बहुत अच्छा तोहफा है जो आज तक मुझसे किसी ने नहीं माँगा।''

मैंने कल भी बताया था कि सन्तों से कोई गलती नहीं होती। वे हमें समझाने के लिए ही ऐसा करते हैं ताकि इन्हें पता लगे कि ये सचखंड पहुँचे हुए परमात्मा से मिले हुए हैं फिर भी अपने अंदर कितनी नम्रता और आजजी रखते हैं। हम भी इनकी नकल करें। क्या हमने महाराज सावन सिंह जी की तरह कभी ऐसा ख्याल किया?

आप आम सतसंगियों से पूछकर देखें! वे यही कहेंगे कि हमने गलती नहीं की, हम गलती कर ही नहीं सकते। अगर हम गलती न करें तो परमात्मा हमारे लिए दरवाजा खोल देगा, हमें छाती से लगाएगा अंदर बैठने के लिए जगह देगा। हमारी गलतियां ही हमें परमात्मा से दूर रखती हैं।

सन्त जैसी हमारी हालत देखते हैं वैसा ही बयान करते हैं। उनके कहने का यही भाव होता है कि ये जीव किसी न किसी तरह परमात्मा की भक्ति करें, अपने आपको सुधारें। अपने

आपको सुधारनें के ये फायदे हैं कि हम अपनी जिंदगी अच्छी बसर कर लेंगे, सुखी रहेंगे और हमारे पास रहने वाले जो बहन-भाई इकट्ठे हुए हैं वे भी सुखी रहेंगे। अगर हम भजन-अभ्यास नहीं करते अपने आपको नहीं सुधारते तो हम खुद दुखी और पास रहने वाले भी दुःखी।

मैं कहा करता हूँ, ''धरती को मान होना चाहिए कि मेरे ऊपर कोई इंसान रह रहा है। धरती को तभी मान होगा अगर हम भजन-सिमरन करें, मन को शान्त रखें।''

हमारा गुरुदेव परमात्मा जब हमें नाम देता है तब वह शब्द रूप होकर हमारे अंदर बैठ जाता है हमारी इंतजार करता है। सन्त नाम देते समय इस किस्म का इंतजाम कर देते हैं कि हमारे प्रालब्ध कर्मों का भुगतान भी होता रहता है और हम रोज-रोज अंदर तरक्की भी करते रहते हैं।

हमें यकीन है कि हमारा प्यारा हमारे अंदर है तो क्यों न हम बाहर से ख्याल को हटाकर भटकते हुए मन को अंदर शब्द के साथ जोड़ें। यह एक घंटे की बैठक है सबने दिल लगाकर बैठना है, जब तक यहाँ से आवाज न दी जाए आप तब तक न उठें। जिन प्रेमियों को नाम नहीं मिला वे भी दोनों आँखों के दरम्यान ध्यान टिकाकर सिमरन करें, प्रकाश जरूर आएगा। हाँ भई! बैठें।

1 सितम्बर 1985

***

16 पी.एस. राजस्थान आश्रम में सतसंग का कार्यक्रम

4, 5 व 6 अगस्त 2017